(काव्य खंड)

पाठ 1 – सूरदास

सूरदास का जीवन परिचय

सूरदास हिंदी साहित्य के भक्ति काल के प्रमुख कवि माने जाते हैं। इनका जन्म 1478 ईस्वी में रुनकता नामक गाँव (मथुरा के निकट) में हुआ था। वे जन्म से अंधे थे, लेकिन उनकी भक्ति, प्रतिभा और संवेदनशीलता ने उन्हें महान कवि बना दिया। सूरदास श्रीकृष्ण भक्ति के महान उपासक थे और उन्होंने अपनी रचनाओं में श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं, रास लीलाओं और भक्त–भावना का अत्यंत मार्मिक वर्णन किया है।

सूरदास स्वामी वल्लभाचार्य के शिष्य थे और पुष्टिमार्ग के अनुयायी थे। उनकी प्रमुख रचना 'सूरसागर' है, जिसमें श्रीकृष्ण की लीलाओं का अत्यंत भावनात्मक चित्रण मिलता है। इसके अलावा उनकी अन्य रचनाएँ 'सूरसारावली' और 'साहित्य लहरी' हैं।

सूरदास की भाषा ब्रजभाषा थी, जो उनके समय में भक्तिकाल के कवियों में अत्यंत लोकप्रिय थी। वे 1583 ईस्वी में ब्रह्मलीन हो गए। सूरदास की काव्य प्रतिभा और कृष्ण भक्ति आज भी लोगों के हृदय को स्पर्श करती है।

प्रश्न अभ्यास

प्रश्न 1. गोपियों द्वारा उद्धव को भाग्यवान कहने में क्या व्यंग्य निहित है?

उत्तर: गोपियों ने उद्धव को भाग्यवान कहा, लेकिन यह व्यंग्य में कहा गया। उनका मानना था कि उद्धव सच में भाग्यवान नहीं हैं, बल्कि वे सौभाग्य से वंचित हैं। वे कृष्ण जैसे प्रेम और सौंदर्य के सागर के पास रहकर भी उस आनंद से अनभिज्ञ हैं। उद्धव प्रेम की गहराई को नहीं समझ पाए, इसलिए उनका जीवन अधूरा है।

प्रश्न 2. उद्धव के व्यवहार की तुलना किस-किस से की गई है?

उत्तर: गोपियों ने उद्धव के व्यवहार की तुलना निम्नलिखित से की है:

1. कमल का पत्ता: जैसे कमल का पत्ता जल में रहते हुए भी जल को ग्रहण नहीं करता, वैसे ही उद्धव कृष्ण के सान्निध्य में रहकर भी उनके प्रेम से अछूते हैं।
2. तेल भरा मटका: जैसे जल में रखा तेल का मटका पानी से अप्रभावित रहता है, वैसे ही उद्धव पर कृष्ण के प्रेम का कोई असर नहीं हुआ।

प्रश्न 3. गोपियों ने किन-किन उदाहरणों के माध्यम से उद्धव को उलाहने दिए है?

उत्तर: गोपियों ने निम्न उदाहरणों से उद्धव को उलाहना दिया:

- कमल का पत्ता

- तेल से भरे मटके
- प्रेम की नदी

उन्होंने बताया कि कृष्ण के पास रहकर भी उद्धव प्रेम की गहराइयों को नहीं समझ पाए।

प्रश्न 4. उद्धव द्वारा दिए गए योग के संदेश ने गोपियों की विरहाग्नि में घी का काम कैसे किया?

उत्तर: गोपियां कृष्ण की प्रतीक्षा में तड़प रही थीं। जब उद्धव ने योग-साधना का संदेश दिया, तो उनका दुख और बढ़ गया। यह संदेश उनकी विरहाग्नि में घी का काम कर गया क्योंकि वे कृष्ण के प्रेम की आस में थीं, लेकिन उद्धव ने उन्हें योग करने की सलाह दी।

प्रश्न 5. 'मरजादा न लही' के माध्यम से कौन-सी मर्यादा न रहने की बात की जा रही है?

उत्तर: 'मरजादा न लही' का अर्थ है प्रेम की मर्यादा का टूटना। गोपियों ने कृष्ण से प्रेम किया था और बदले में प्रेम की अपेक्षा की थी। लेकिन कृष्ण ने योग का संदेश भेजा, जिससे गोपियां यह मानने लगीं कि कृष्ण ने प्रेम की मर्यादा नहीं रखी।

प्रश्न 6. कृष्ण के प्रति अपने अनन्य प्रेम को गोपियों ने किस प्रकार अभिव्यक्त किया है?

उत्तर: गोपियों ने अपने प्रेम को हारिल पक्षी के उदाहरण से व्यक्त किया। जैसे हारिल पक्षी लकड़ी को अपने पंजों में पकड़े रहता है, वैसे ही गोपियां कृष्ण के प्रेम को अपने हृदय में दृढ़ता से थामे हुए थीं। वे दिन-रात कृष्ण की रट लगाती थीं और उनके प्रेम में लीन थीं।

प्रश्न 7. गोपियों ने उद्धव से योग की शिक्षा कैसे लोगो को देने की बात कही है?

उत्तर: गोपियों ने कहा कि योग की शिक्षा उन्हें दी जाए जिनका मन चंचल है। उनका कहना था कि उनका मन तो पहले से ही कृष्ण के प्रेम में एकाग्र है, इसलिए योग की आवश्यकता उन्हें नहीं है।

प्रश्न 8. प्रस्तुत पदों के आधार पर गोपियों का योग-साधना के प्रति दृष्टिकोण स्पष्ट करें।

उत्तर: गोपियों के अनुसार योग-साधना उनके लिए व्यर्थ है। उन्होंने इसे अप्राकृतिक और कड़वा ज्ञान बताया, जिसे वे स्वीकार नहीं कर सकतीं। उनके लिए कृष्ण के प्रेम में लीन होना ही पर्याप्त है और उन्हें किसी और साधना की आवश्यकता नहीं।

प्रश्न 9. गोपियों के अनुसार राजा का धर्म क्या होना चाहिए?

उत्तर: गोपियों के अनुसार राजा का धर्म अपनी प्रजा की हर प्रकार से रक्षा करना और नीति के अनुसार कार्य करना है। एक सच्चा राजा वही है जो अन्याय का साथ न दे और सदैव प्रजा के कल्याण के लिए कार्य करे।

प्रश्न 10. गोपियों को कृष्ण में ऐसे कौन-से परिवर्तन दिखाई दिए, जिनके कारण वे अपना मन वापस लेने की बात कहती हैं?

उत्तर: गोपियों ने महसूस किया कि कृष्ण पहले प्रेम का बदला प्रेम से देते थे, लेकिन अब उन्होंने राजनीति सीख ली है। अब वे प्रेम की मर्यादा भूलकर योग का संदेश देने लगे हैं। गोपियों को यह परिवर्तन अस्वीकार्य लगा, जिससे उनका मन और अधिक आहत हुआ।

प्रश्न **11.** गोपियों ने अपने वाक्चातुर्य के आधार पर ज्ञानी उद्धव को परास्त कर दिया, उनके वाक्चातुर्य की विशेषताएं लिखें।

उत्तर: गोपियों ने अपने व्यंग्य, तर्क और तीखे वचनों से उद्धव को परास्त किया। उनकी विशेषताएं इस प्रकार हैं:

1. व्यंग्य: गोपियों ने उद्धव पर व्यंग्य करके उनकी बुद्धिमत्ता पर सवाल उठाए।
2. तर्क: उन्होंने तर्कों के माध्यम से अपनी बात सिद्ध की।
3. तीखे प्रहार: गोपियों के तीखे वचन उद्धव को निरुत्तर कर गए।

प्रश्न **12.** संकलित पदों को ध्यान में रखते हुए सूर के भ्रमरगीत की मुख्य विशेषताएं बताइए।

उत्तर: सूरदास के भ्रमरगीत की मुख्य विशेषताएँ इस प्रकार हैं:

1. भाव पक्ष (**Emotional Aspect):** भ्रमरगीत में सूरदास ने गोपियों के प्रेम और विरह का अत्यंत सुंदर और भावनात्मक चित्रण किया है। यह गीत प्रेम, वियोग, और मिलन की भावना को व्यक्त करता है, जिसमें प्रेमी-प्रेमिका के बीच के अंतरंग रिश्ते को प्रमुखता दी जाती है। विशेष रूप से, गोपियों का श्री कृष्ण के प्रति अपार प्रेम और उनका विरह, गीतों के माध्यम से व्यक्त किया गया है।
2. कला पक्ष (**Artistic Aspect):** सूरदास की रचनाओं में ब्रजभाषा का उपयोग हुआ है, जो अत्यंत मीठी, सरल और प्रभावशाली होती है। उनकी शैली सजीव और आकर्षक है, जिससे पाठक या श्रोता पर गहरा प्रभाव पड़ता है।
3. अलंकार (**Figures of Speech):** सूरदास के भ्रमरगीत में अनुप्रास, उपमा, रूपक जैसे अलंकारों का खूबसूरत प्रयोग किया गया है। उदाहरण के लिए, भ्रमर (मधुमक्खी) का प्रतीक प्रेमी के रूप में और फूल का प्रतीक प्रेमिका के रूप में लिया गया है, जो काव्य में गहरे अर्थ और भावनाओं को उत्पन्न करते हैं।
4. छंद (**Meter):** सूरदास के भ्रमरगीत पद छंद में लिखे गए हैं, जो काव्य की लयबद्धता को बनाए रखते हुए उसे संगीतात्मक रूप में प्रस्तुत करते हैं। इन छंदों का संगति और ताल मेल बहुत सुंदर होता है, जो गीतों को एक मधुर संगीतात्मक स्वरूप प्रदान करता है।
5. संगीतात्मकता (**Musical Aspect):** सूरदास के भ्रमरगीतों में संगीत की भी गहरी छाप होती है। उनकी रचनाएँ शास्त्रीय संगीत की धारा से प्रेरित हैं, जो उनके गायन में विशिष्टता और भावनाओं की अभिव्यक्ति को और प्रकट करती हैं।

रचना और अभिव्यक्ति

प्रश्न 13. गोपियों ने उद्धव के सामने तरह-तरह के तर्क दिए हैं, आप अपनी कल्पना से और तर्क दीजिए।

उत्तर - गोपियाँ उद्धव के सामने श्री कृष्ण के प्रति अपने प्रेम और भक्ति को व्यक्त करते हुए कई प्रकार के तर्क देती हैं। इन तर्कों में वे कृष्ण के प्रति अपनी अद्भुत श्रद्धा और समर्पण को प्रकट करती हैं।

1. गोपियाँ अपनी आत्मा के रूप में कृष्ण को देखती हैं: गोपियाँ कह सकती हैं कि "हमारे लिए कृष्ण केवल एक मानव रूप में नहीं हैं, बल्कि वे हमारी आत्मा के समान हैं। हमारी प्रत्येक सांस में उनका नाम बसा है, और हमारा जीवन उनके बिना अधूरा है। उनका ध्यान, उनके प्रति हमारी श्रद्धा ही हमारी वास्तविक पहचान है।"

2. प्रेम में कोई शर्त नहीं होती: गोपियाँ यह तर्क भी दे सकती हैं कि "हमारा प्रेम कृष्ण के प्रति बिना किसी शर्त के है। जब प्रेम सच्चा होता है, तो वह न तो रूप-रंग को देखता है, न किसी सामाजिक बंधन को। हमारे दिल में कृष्ण का स्थान सर्वोपरि है, और उन्हें छोड़कर हम कहीं और नहीं जा सकते।"

3. गोपियाँ कृष्ण के साथ अपने संबंध को दिव्य मानती हैं: "हमारा प्रेम कृष्ण से केवल भौतिक प्रेम नहीं है, यह एक दिव्य और परम प्रेम है। हम अपने शरीर से नहीं, बल्कि अपनी आत्मा से कृष्ण से जुड़ी हुई हैं।"

4. धर्म और भक्ति में सर्वोच्चता: गोपियाँ यह भी तर्क कर सकती हैं, "कृष्ण का प्रेम ही सर्वोत्तम धर्म है। हमें अन्य कोई कार्य नहीं चाहिए, केवल उनका प्रेम और आशीर्वाद चाहिए। जब हमारी भक्ति सच्ची है, तो हमें संसार की किसी भी वस्तु या रिश्ते की आवश्यकता नहीं रहती।"

इस प्रकार, गोपियाँ उद्धव के सामने कृष्ण के प्रति अपनी भक्ति, प्रेम, और समर्पण के गहरे तर्क प्रस्तुत करती हैं, जो उनकी आस्था और श्रद्धा को व्यक्त करते हैं।

प्रश्न 14. उद्धव ज्ञानी थे, नीति की बातें जानते थे; गोपियों के पास ऐसी कौन-सी शक्ति थी जो उनके वाक्चातुर्य में मुखरित हो उठी?

उत्तर - गोपियों के पास जो अद्वितीय शक्ति थी, वह उनकी प्राकृतिक भक्ति और निष्कलंक प्रेम में निहित थी। वे श्री कृष्ण के प्रति अपनी पूरी श्रद्धा और प्रेम में पूरी तरह से समाहित थीं। जब उद्धव ने गोपियों के वाक्चातुर्य को देखा, तो उन्होंने यह महसूस किया कि उनके शब्दों में जो गहराई और प्रभाव है, वह केवल उनके कृष्ण के प्रति अपार भक्ति और प्रेम से ही उत्पन्न हो सकता है।

गोपियों का वाक्चातुर्य उनके कृष्ण के प्रति अनन्य प्रेम का साक्षात उदाहरण था। उनका प्रेम न केवल शारीरिक या मानसिक था, बल्कि वह आत्मा तक पहुँचने वाला था, जो उनके शब्दों और वाक्य में साफ तौर पर दिखाई देता था। वे अपने भाषण के जरिए कृष्ण के प्रति अपनी भक्ति और प्रेम को प्रकट करती थीं, जो उद्धव के लिए एक नई और चमत्कारी अनुभव था।

प्रश्न 15. गोपियों ने यह क्यों कहा कि हरि अब राजनीति पढ़ आएं हैं? क्या आपको गोपियों के इस कथन का विस्तार समकालीन राजनीति में नज़र आता है, स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर गोपियों ने कहा, "लगता है हरि अब राजनीति सीखकर आए हैं।" इसका कारण यह है कि जब कृष्ण गोपियों के बीच रहते थे, तब वे केवल प्रेम और आनंद में डूबे रहते थे। लेकिन मथुरा जाने के बाद उन्होंने उद्धव के माध्यम से गोपियों को संदेश भिजवाया कि वे प्रेम को छोड़कर योग-साधना का मार्ग अपनाएं। गोपियों को ऐसा लगा कि अब कृष्ण की सोच कूटनीति से भर गई है। इसलिए उन्होंने ऐसा कहा।

गोपियों के इस कथन को यदि समकालीन राजनीति से जोड़ा जाए, तो उस समय की राजनीति में भी कूटनीति का व्यापक रूप से उपयोग होता था, ठीक वैसे ही जैसे कृष्ण ने किया।

पद व्याख्या:

पद -1

"ऊधौ, तुम हौ अति बड़भागी।
अपरस रहत सनेह तगा तैं, नाहिन मन अनुरागी।।"

व्याख्या: गोपियाँ कहती हैं कि हे उद्धव! तुम बहुत सौभाग्यशाली हो, क्योंकि तुम प्रेम की डोरी से छुए बिना रहते हो। तुम्हारा मन किसी से भी प्रेम में नहीं बंधता, यानी तुम योगी हो, निर्लिप्त हो।

"पुरइनि पात रहत जल भीतर, ता रस देह न दागी।"

व्याख्या: जिस प्रकार कमल का पत्ता जल में रहते हुए भी जल से प्रभावित नहीं होता, उसी तरह तुम प्रेम में रहते हुए भी उसमें लिप्त नहीं होते। तुम्हारी आत्मा पर प्रेम का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

"ज्यौं जल माहँ तेल की गागरि, बूँद न ताकौं लागी।"

व्याख्या: जैसे पानी में तेल से भरा घड़ा हो, और पानी की एक भी बूँद उससे न छुए, वैसे ही तुम्हारा मन संसार में रहकर भी बिल्कुल निर्लिप्त है।

"प्रीति-नदी मैं पाउँ न बोरद्यौ, दृष्टि न रूप परागी।"

व्याख्या: तुम प्रेम की नदी में कभी डूबे नहीं हो, न तुम्हारी दृष्टि ने किसी रूप पर आसक्ति दिखाई है। यानी तुमने कभी सच्चे प्रेम का अनुभव ही नहीं किया।

"'सूरदास' अबला हम भोरी, गुर चाँटी ज्यौं पागी।।"

व्याख्या: गोपियाँ कहती हैं कि हम अबलाएँ हैं, भोली-भाली हैं। जैसे बच्चा मीठी वस्तु के लिए लालायित होता है, वैसे ही हम श्रीकृष्ण के प्रेम में बंधी हुई हैं। 'सूरदास' कहते हैं कि गोपियाँ प्रेम की गहराई में पूरी तरह डूबी हुई हैं।

भावार्थ:

इस पद में गोपियाँ उद्धव को यह समझाने की कोशिश करती हैं कि योग और ज्ञान से बढ़कर प्रेम का मार्ग श्रेष्ठ है। उद्धव की निर्लिप्तता की तुलना में गोपियों का कृष्ण-प्रेम अधिक सजीव, सच्चा और समर्पणपूर्ण है। सूरदास ने इस पद के माध्यम से भक्ति-मार्ग की श्रेष्ठता को दर्शाया है।

पद -2

मूल पद:

"मन की मन ही माँझ रही।
कहिए जाइ कौन पै ऊधौ, नाहीं परत कही।
अवधि अधार आस आवन की, तन मन बिथा सही।
अब इन जोग सँदेसनि सुनि-सुनि, बिरहिनि बिरह दही।
चाहति हुतीं गुहारि जितहिं तैं, उत तैं धार बही।
'सूरदास' अब धीर धरहिं क्यौं, मरजादा न लही।।"

व्याख्या: यह पद भक्त कवि सूरदास द्वारा रचित है, जिसमें विरहिणी गोपी श्रीकृष्ण के वियोग में व्याकुल होकर अपनी पीड़ा व्यक्त करती है।

1. "मन की मन ही माँझ रही..."
    - गोपी कहती है कि उसका मन श्रीकृष्ण के विरह में निरंतर डूबा हुआ है, पर वह अपनी इस पीड़ा को किसी के सामने प्रकट नहीं कर पा रही।
    - "ऊधौ" (उद्धव) से पूछती है कि अब वह किससे अपनी व्यथा कहे, क्योंकि उसकी बातों का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।
2. "अवधि अधार आस आवन की..."
    - श्रीकृष्ण के लौटने की आशा ही उसके जीवन का एकमात्र सहारा है, किंतु यह अनिश्चितता उसके तन-मन को कष्ट दे रही है।
    - "जोग संदेसनि" (योग के संदेश) सुनकर, जो उद्धव लाए हैं, वे उसकी विरह-वेदना को और बढ़ा रहे हैं।
3. "चाहति हुतीं गुहारि जितहिं तैं..."
    - गोपी कहती है कि जिस ओर से (श्रीकृष्ण से) वह सहायता की गुहार लगाती, उधर से ही निराशा की धारा बह रही है।
    - अंत में, सूरदास कहते हैं कि अब धैर्य रखने का कोई औचित्य नहीं, क्योंकि मर्यादा (प्रेम की सीमा) पार हो चुकी है।

भावार्थ:

इस पद में अनुराग और विरह की तीव्र अनुभूति है। गोपी का मन श्रीकृष्ण के प्रति इतना आकंठ डूबा है कि उसे कोई योग या ज्ञान सांत्वना नहीं दे पाता। सूरदास ने प्रेमभक्ति की पराकाष्ठा को दर्शाया है, जहाँ विरही का धैर्य टूट जाता है और वह बस प्रियतम के दर्शन की आकांक्षा करता है।

शैलीगत विशेषताएँ:

- ब्रजभाषा की मधुरता एवं अनुप्रास अलंकार ("मन की मन")।
- द्वंद्वात्मकता—आशा और निराशा के बीच गोपी का संघर्ष।
- भक्ति रस की प्रधानता।

पद -3

भावार्थ एवं व्याख्या:

"हमारैं हरि हारिल की लकरी।
मन क्रम बचन नंद-नंदन उर, यह दृढ़ करि पकरी।"

भावार्थ: कवि सूरदास जी कहते हैं कि हमने हरि (कृष्ण) को हारिल (तोते) की लकड़ी (सहारा) की तरह पकड़ लिया है। अर्थात्, जिस प्रकार तोता लकड़ी को मजबूती से पकड़कर उसी पर टिका रहता है, उसी प्रकार हमने भी मन, वचन और कर्म से नंदनंदन कृष्ण को ही अपना आधार बना लिया है।

"जागत सोवत स्वप्न दिवस-निसि, कान्ह-कान्ह जक री।"

भावार्थ: जागते, सोते, सपने में, दिन-रात हर समय मेरा मन केवल "कान्हा-कान्हा" का जाप करता रहता है।

"सुनत जोग लागत है ऐसौ, ज्यौं करुई ककरी।"

भावार्थ: जब कोई योग या ध्यान की बात सुनता हूँ, तो मुझे ऐसा लगता है जैसे कड़वी ककड़ी (करेला) खाने जैसा कष्टदायक। अर्थात्, मुझे कृष्ण-भक्ति के अलावा अन्य किसी साधना में रुचि नहीं है।

"सु तौ ब्याधि हमकौं लै आए, देखी सुनी न करी।"

भावार्थ: यदि कोई कहता है कि यह भक्ति तो एक प्रकार का पागलपन है, तो मैंने उसकी बात न तो सुनी है और न ही उस पर ध्यान दिया है।

"यह तौ 'सूर' तिनहिं लै सौंपौ, जिनके मन चकरी।।"

भावार्थ: हे सूरदास! यह (कृष्ण-प्रेम) उन्हीं को समझ आता है, जिनका मन चकरी (चक्रधारी भगवान विष्णु या कृष्ण) में लगा हुआ है।

काव्यगत विशेषताएँ:

- भक्ति भावना: कृष्ण के प्रति अनन्य प्रेम और समर्पण।
- उपमा अलंकार: "हारिल की लकरी" और "करुई ककरी" जैसे उदाहरणों से काव्य सुंदर हुआ है।
- सरल भाषा: ब्रजभाषा की मधुरता एवं सरलता।

निष्कर्ष: इस पद में सूरदास जी ने कृष्ण-भक्ति की एकनिष्ठता को हारिल पक्षी के उदाहरण से स्पष्ट किया है तथा संसारिक विचारों को नकारते हुए भगवान के प्रति पूर्ण समर्पण व्यक्त किया है।

पद -4

भावार्थ एवं व्याख्या:

"हरि हैं राजनीति पढ़ि आए।"
व्याख्या: भगवान हरि (श्रीकृष्ण) ने राजनीति का गहन अध्ययन किया है। वे राजनीति के पारंगत विद्वान हैं और उन्होंने इसका सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त किया है।

"समुझी बात कहत मधुकर के, समाचार सब पाए।"
व्याख्या: मधुकर (भ्रमर, जो यहाँ श्रीकृष्ण का प्रतीक है) ने समझदारी भरी बात कही है। उन्होंने सभी समाचारों (ज्ञान और अनुभव) को प्राप्त कर लिया है।

"इक अति चतुर हुते पहिलैं ही, अब गुरु ग्रंथ पढ़ाए।"
व्याख्या: वे पहले से ही अत्यंत चतुर थे, लेकिन अब उन्होंने गुरु और ग्रंथों का अध्ययन कर अपनी बुद्धि को और भी परिष्कृत किया है।

"बढ़ी बुद्धि जानी जो उनकी, जोग-संदेस पठाए।"
व्याख्या: उनकी बुद्धि इतनी विकसित हो गई है कि वे योग और संदेश (ज्ञान) का प्रसार करते हैं।

"ऊधौ भले लोग आगे के, पर हित डोलत धाए।"
व्याख्या: ऊधौ (उद्धव) जैसे भले लोग पहले दूसरों के हित के लिए दौड़ते थे, परन्तु अब...

"अब अपनै मन फेर पाइहैं, चलत जु हुते चुराए।"
व्याख्या: अब वे अपने मन को फेर चुके हैं और जो चालाकी से काम करते थे, वे अब छल-कपट करने लगे हैं।

"ते क्यौं अनीति करैं आपुन, जे और अनीति छुड़ाए।"
व्याख्या: वे लोग स्वयं अन्याय क्यों करते हैं, जबकि उनका कर्तव्य तो अन्याय को दूर करना था?

"राज धरम तौ यहै 'सूर', जो प्रजा न जाहि सताए।।"

व्याख्या: सूरदास जी कहते हैं कि राजा का धर्म यही है कि वह प्रजा को कभी सताए नहीं, बल्कि उसकी रक्षा करे।

भावार्थ: इस पद में सूरदास जी ने श्रीकृष्ण के राजनीतिक ज्ञान और न्यायप्रियता की प्रशंसा की है। साथ ही, उन्होंने उन लोगों पर कटाक्ष किया है जो पहले परोपकारी थे, लेकिन अब स्वार्थी हो गए हैं। अंत में, कवि ने राजधर्म का सार बताते हुए कहा है कि एक सच्चा राजा वही है जो प्रजा के कल्याण के लिए कार्य करता है, न कि उन्हें सताता है।

यह पद नैतिकता, न्याय और सच्चे शासन के आदर्शों को प्रस्तुत करता है।